Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 11 ~ Issue 5 (2023) pp: 214-216
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

मारवाड़ में राजपूत शासकों का आपसी संघर्ष और मराठों का प्रवेश

मंजू वर्मा
सह आचार्य इतिहास
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय
सीकर –332001

सारांशः– 18 वी सदी के पूर्वार्द्ध में मुगलों की केन्द्रीय शक्ति के पतन के पश्चात् राजपूत शासक महत्वाकांक्षी हो गये। केन्द्रीय सता के सहयोग के अभाव में राजाओं को पुनः अपने सामन्तों की सहायता और सहयोग पर निर्भर हो जाना पड़ा। सामन्तों के आन्तरिक दबाव से मुक्त होने और आपसी संघर्षों को सफलतापूर्वक हल करने तथा अपनी निरंकुशता एवं अपने अधिकारों को दृढ़ बनाये रखने के लिए राजपूत शासकों ने मराठों का सैनिक सहयोग प्राप्त किया। लेकिन यही कार्य उनके विरोधियों ने भी किया। आरम्भ में, राजपूतानें में मराठों का प्रवेश एक आक्रमणकारी की अपेक्षा राजपूतों के ही किसी एक पक्ष के भड़ैत सैनिक सहयोगी के रूप में हूआ। मारवाड़ के आपसी संघर्ष कभी न निपटने वाले थे। मारवाड़ के आपसी संघर्ष में भाग लेने में मराठों का मुख्य लक्ष्य अधिक से अधिक धन वसूल करना था।

***Received** 07 May, 2023; **Revised** 16May, 2023; **Accepted** 19 May, 2023 © The author(s) 2023.*
Published with open access at www.questjournals.org

18 वी सदी के पूर्वार्द्ध में मुगलों की केन्द्रीय शक्ति के पतन के पश्चात् राजपूत शासक महत्वाकांक्षी हो गये। जोधपुर के अभयसिंह ने बीकानेर पर आक्रमण किया। (1) तो जयपुर के सवाई जयसिंह ने एक तरफ तो जोधपुर पर आक्रमण किया(2) और दूसरी तरफ बूंदी राज्य पर भी अपनी सता स्थापित करने का प्रयत्न किया।(3) केन्द्रीय सता के सहयोग के अभाव में राजाओं को पुनः अपने सामन्तों की सहायता और सहयोग पर निर्भर हो जाना पड़ा। ऐसी स्थिति में शासकों और सामन्तों के आपसी सम्बंधों में भी परिवर्तन हुआ। सामन्तों ने अपने पुराने अधिकारों को पुनः स्थापित करने का प्रयत्न किया, जिनमें उतराधिकारी क चयन में निर्णायक भाग ले सकना महत्वपूर्ण था। क्योंकि शासकों के विविध वैवाहिक सम्बंधों के फलस्वरूप सिंहासन के लिए कई उम्मीदवार रहतें थें। जो अपने–अपने पक्ष को दृढ़ बनाने के लिए प्रमुख सामन्तों का अथवा किसी बाह्य शक्ति का समर्थन प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहते थे। इसलिए सामन्तों को अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिल गया।

उदाहरणार्थ, जोधपुर के कूँपावत, उदावत आदि सरदारों ने महाराजा अभयसिंह के विरूद्ध उसके छोटे भाईयों आनन्दसिंह और रायसिंह का पक्ष लेकर अभयसिंह के लिए भारी संकट पैदा कर दिया था।(4) फिर जोधपुर के सामन्तों ने महाराजा रामसिंह के विरूद्ध बख्तसिंह और उसके पुत्र विजय सिंह का पक्ष लिया और अन्ततोगत्वा रामसिंह को मारवाड़ के सिंहासन से हाथ धोना पड़ा। (5) सामन्तों के आन्तरिक दबाव से मुक्त होने और आपसी संघर्षों को सफलतापूर्वक हल करने तथा अपनी निरंकुशता एवं अपने अधिकारों को दृढ़ बनाये रखने के लिए राजपूत शासकों ने मराठों का सैनिक सहयोग प्राप्त किया। लेकिन यही कार्य उनके विरोधियों ने भी किया। क्योंकि मराठों में भी दलबन्दी थी और एक सरदार दूसरे सरदार से ईर्ष्या करता था। इस प्रकार, आरम्भ में, राजपूतानें में मराठों का प्रवेश एक आक्रमणकारी की अपेक्षा राजपूतों के ही किसी एक पक्ष के भड़ैत सैनिक सहयोगी के रूप में हूआ। जोधपुर के निर्वासित महाराजा रामसिंह ने भी अपने सिंहासन को पुनः प्राप्त करने के लिए अपने चाचा बख्तसिंह और बाद में अपने चचैरे भाई विजय सिंह के विरूद्ध मराठों का सैनिक समर्थन प्राप्त किया था।(6)

मारवाड़ के आपसी संघर्ष में भाग लेने में मराठों का मुख्य लक्ष्य अधिक से अधिक धन वसूल करना था। मारवाड़ के आपसी संघर्ष कभी न निपटने वाले थे।(7) प्रत्येक राज्य में दो या दो से अधिक दलों में से प्रत्येक को मराठों का सैनिक समर्थन मिलने की सम्भावना रहती थी। प्रश्न केवल इतना रहता था कि मराठों की सैनिक सेवाओं का अधिक मूल्य कौन दे सकता था। संघर्षरत पक्ष भारी कीमत चुकाने का वायदा करके उनकी सेवाओं को कम करना शुरू कर देते थे। कालान्तर में वे अपने वायदा अनुसार मराठों को धन देने में असमर्थ रहें। इस बकाया धन को वसूल करने के लिए मराठों को सैनिक बल पर धन वसूली का मार्ग अपनाना पडा। इसी प्रकार, राजपूत शासकों ने मराठों को वार्षिक

खिराज देना तो स्वीकार कर लिया था।[8] परन्तु उन्होंने स्वेच्छा से वार्षिक खिराज की रकम भी कभी नियमित रूप से अदा नहीं की। परिणामस्वरूप खिराज की रकम भी बकाया रहने लगी और उसकी वसूली के लिए मराठों को बार–बार धमकियों, लूटमार तथा सैनिक शक्ति के प्रयोग का सहारा लेना पड़ता।

उदाहरणार्थ जोधपुर के विजय सिंह ने 1769–72 का खिराज जो कि रू 5.30 लाख के लगभग था, नहीं चुकाया। सिंधिया ने धमकी दी कि यदि 15 जून 1772 तक बकाया रकम नहीं चुकाई गई तो मारवाड़ को नष्ट कर दिया जाएगा।[9] फिर भी विजय सिंह ने केवल एक लाख रू चुकाया।[10] तब दिसंबर 1772 में सिंधिया ने पुनः धमकी दी।[11] जिसका कोई परिणाम नहीं निकला। अतः जब 1774 के शुरू में उसने अभियान की तैयारी की तब जोधपुर ने अपना हिसाब साफ किया।[12] चूंकि मारवाड़ शासक स्वेच्छा से खिराज अदा नहीं करते थे इसलिए बकाया निरंतर बढ़ती जाती थी। मारवाड़ शासक तत्कालीन लाभ प्राप्ति को ध्यान में रखते हुए इस नीति के दूरगामी परिणामों पर ध्यान नहीं देते थे। संभवतः मराठों के समर्थन से वे पहले की भांति अपने राज्यों में निरंकुश शासक बनना चाहते थे। परंतु इसके विपरीत मराठा हस्तक्षेप से राजपूत राज्यों में राजाओं और सामंतों के आपसी संबंधों में अधिक तनाव पैदा हो गया क्योंकि इनमें से प्रत्येक पक्ष को मराठों का समर्थन उपलब्ध हो सकता था। उदाहरणार्थ 1794 ईस्वी.में मारवाड़ नरेश भीम सिंह और उसके सामंत सवाई सिंह (पोकरण ठाकुर) में विवाद उठ खड़ा हुआ।

सवाई सिंह ने लकवा दादा को जोधपुर पर चढ़ाई करने के लिए आमंत्रित किया। भीम सिंह ने भारी रकम देकर मराठों को वापस कर दिया।[13] मराठों का हस्तक्षेप अधिक धन मिलने के वायदे के आधार पर ही संभव था फलस्वरूप परिलक्षित धन ने मिलने पर मराठे राज्यों में लूटमार तथा आतंक फैलाकर धन वसूल करने लगते थे। राजपूत राजा मराठों के इन अभियानों को रोकने में असमर्थ थे। मराठे इस लूटमार में खालसा भूमि तथा जागीरो में कोई अंतर नहीं समझते थे। कई बार तो राजा लोग ही उन्हें जागीरदारों से धन वसूल करने की स्वीकृति देते थे। इसके अलावा, राजपूत शासक बकाया रकम के भुगतान के लिए कई परगनों की आय मराठों के पास गिरवी रख देते थे। मराठे अधिकारी इन पर परगनों से बलपूर्वक धन वसूल करते थे। 1791 में जोधपुर के विजय सिंह ने सिंधिया को 60 लाख रू देने का वादा किया तथा 20 लाख रूपयों के बदले सांभर, मारोठ, नावाँ, परबतसर, मेड़ता और सोजत की आमदनी अमानत के तौर पर मराठों को सौंप दी।[14] सामंतों ने मराठों द्वारा अपनी जागीरों के लुटे जाने के कारण खालसा भूमि को अधिकृत कर या लूटमार कर अपनी क्षतिपूर्ति करना आरंभ किया। इस प्रकार मराठा हस्तक्षेप से शासकों और सामंतों का आपसी तनाव बढ़ता ही गया। मारवाड़ के राजाओं ने अपने अधिकारों को सुरक्षित बनाए रखने की आशा में मराठों को आमंत्रित किया था, परंतु उन्हें निराश होना पड़ा और राज्यों की आर्थिक स्थिति भी बिगड़ गई। मराठा निर्भरता से अपने आप को बचाने की दृष्टि से राजपूत राजाओं ने एक अन्य दोषपूर्ण पद्धति भी अपनाई। इन्होंने अपने कुलों के राजपूतों के अलावा अरबों, रूहिलो, सिंधी, मुसलमानों और पूरबियों कि भड़ैत सेना रखना शुरू किया।[15] राजाओं की यह वैतनिक सेना कालांतर में मराठा सहायता से भी अधिक विनाशकारी सिद्ध हुई।

संदर्भ सूची :–

1. (क) मारवाड़ की ख्यात, खण्ड 2, पृ. 23
   (ख) रेउ –मारवाड़ का इतिहास, खण्ड 1 पृ. 251
2. मारवाड़ की ख्यात, खण्ड 2, पृ. 130
3. (क) वंश भास्कर, खण्ड 4, पृ. 3126–27
   (ख) राजस्थान राज्य अभिलेखागार कोटा रिकार्डस् भण्डार न. 1, बस्ता न. 47, वि.सं.1790–91
4. (क) मारवाड़ की ख्यात, खण्ड 2, पृ. 172
   (ख) रेउ –मारवाड़ का इतिहास, खण्ड 1 पृ. 334
   (ग) श्यामलदास वीर विनोद, पृ. 844
5. (क) मारवाड़ की ख्यात, खण्ड 2, पृ. 172
   (ख) दयालदास की ख्यात, खण्ड 2 पृ. 72–73
   (ग) सिलेक्शन्स फ्रोम पेशवा दफतर,खण्ड 21, पृ. 25
6. (क) मारवाड़ की ख्यात, खण्ड 2, पृ. 172
   (ख) दयालदास की ख्यात, खण्ड 2 पृ. 72–73

*Corresponding Author: मंजू वर्मा

टिप्पणी–

7. .उनके आपसी संघर्ष चार प्रकार के थे– (1) शासक ओर शासक के मध्य, (2) शासक और सामन्तों के मध्य, (3) उतराधिकार संघर्ष, और (4) एक ही राज्य के सामन्तों का आपसी संघर्ष
8. जोधपुर राज्य सिन्धिया को खिराज देता था। जयपुर और बूंदी सिंधिया तथा होल्कर दोनों को, उदयपुर, कोटा और भरतपुर सिंधिया, होल्कर और पेशवा तीनों को, करौली पेशवा को, प्रतापगढ़ होल्कर को, डूँगरपुर और बांसवाड़ा–धार के पँवार को खिराज देते थे। जैसलमेर और बीकानेर ने मराठों को कभी खिराज नहीं दिया।

9 राजस्थान राज्य अभिलेखागार (जोधपुर रिकॉर्डस) पोर्टफोलियो फाइल नंबर 6 पत्र संख्या 18–19 10.
राजस्थान राज्य अभिलेखागार (जोधपुर रिकॉर्डस) पोर्टफोलियो फाइल नंबर 4 पृ–30

11 राजस्थान राज्य अभिलेखागार (जोधपुर रिकॉर्डस) पोर्टफोलियो फाइल नंबर 6 पत्र संख्या 17

12 (क) राजस्थान राज्य अभिलेखागार (जोधपुर रिकॉर्डस) पोर्टफोलियो फाइल नंबर 6 पत्र संख्या 29–30
(ख) राजस्थान राज्य अभिलेखागार (जोधपुर रिकॉर्डस) पोर्टफोलियो फाइल नंबर 2 पृ– 125–26

13 (क) मारवाड़ की ख्यात खंड 3 प्रश्न 6
(ख) रेउ –मारवाड़ का इतिहास, खण्ड 1 पृ. 397

14 (क) राजस्थान राज्य अभिलेखागार (जोधपुर रिकॉर्डस) पोर्टफोलियो फाइल नंबर 6 पत्र संख्या 57–59 .
(ख) रेउ –मारवाड़ का इतिहास, खण्ड 1 पृ. 390

15 (क) आसोपा– मारवाड़ का मूल इतिहास, पृ– 244
(ख) कर्नल टॉड–एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान, भाग 2 पृष्ठ 98

*Corresponding Author: मंजू वर्मा